

श्री वर्तमान चौबीसी पूजन

(कविवर वृन्दावनदास कृत)

वृषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥
विमल अनन्त धर्म जस-उज्ज्वल, शांति कुंशु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: ।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

मुनि-मन-सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।

भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा ॥

चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।

पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा ।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर-रंग भरी ।

जिन-चरनन देत चढ़ाय, भव-आताप हरी ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल सित सोम-समान सुन्दर अनियारे ।

मुक्ता फल की उनमान पुज्ज धरों प्यारे ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

वर-कंज कदम्ब कुरण्ड, सुमन सुगन्ध भरे ।

जिन-अग्र धरों गुन-मण्ड, काम-कलंक हरे ॥चौबीसों ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन-मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।

रस-पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥चौबीसों. ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम-खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगै ।
सब तिमिर मोहक्षय जाय, ज्ञान-कला जागै ॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द-कन्द सही ।
पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशगन्ध हुताशन माहिं, हे प्रभु! खेवत हों ।

मिस-धूम करम जर जाहिं, तुम पद सेवत हों ॥चौबीसों॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।

देखत दृग-मनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥चौबीसों॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों ।

तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥चौबीसों॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ-पद, माथ नाथ हित हेत ।

गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत ॥

(त्रिभंगी)

जय भव-तम भंजन, जन-मन-कंजन, रंजन दिन-मनि, स्वच्छ करा ।

शिव-मग-परकाशक, अरिगण-नाशक, चौबीसों जिनराज वरा ॥

(पद्धरि)

जय ऋषभदेव रिषि-गन नमन्त, जय अजित जीत वसु-अरि तुरन्त ।

जय सम्भव भव-भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्द-पूर ॥

जय सुमति सुमति-दायक दयाल, जय पद्म पद्म द्युति तनरसाल ।

जय जय सुपाश्वर्ष भव-पास नाश, जय चन्द, चन्द-तनद्युति प्रकाश ॥

जय पुष्पदन्त द्युति-दन्त-सेत, जय शीतल शीतल-गुननिकेत ।

जय श्रेयनाथ नुत-सहस्रभुज्ज, जय वासव-पूजित वासुपुज्ज ॥

जय विमल विमल-पद देनहार, जय जय अनन्त गुण-गण अपार ।
जय धर्म धर्म शिव-शर्म देत, जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत ॥
जय कुन्थु कुन्थुवादिक रखेय, जय अरजिन वसु-अरि छय करेय ।
जय मल्लि मल्ल हत मोह-मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत-शल्ल-दल्ल ॥
जय नमि नित वासव-नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष-चक्र नेम ।
जय पारसनाथ अनाथ-नाथ, जय वर्द्धमान शिव-नगर साथ ॥

(त्रिभंगी)

चौबीस जिनन्दा, आनन्द-कन्दा, पाप-निकन्दा, सुखकारी ।

तिन पद-जुग-चन्दा, उदय अमन्दा, वासव-वन्दा, हितकारी ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर ।

तिन-पद मन-वच-धार, जो पूजै सो शिव लहै ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

करलो जिनवर का गुणगान

करलो जिनवर का गुणगान, आई मंगल घड़ी ।

आई मंगल घड़ी, देखो मंगल घड़ी ॥करलो ॥१॥

वीतराग का दर्शन पूजन भव-भव को सुखकारी ।

जिन प्रतिमा की प्यारी छवि-लख मैं जाऊँ बलिहारी ॥करलो ॥२॥

तीर्थकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष के दाता ।

जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता ॥करलो ॥३॥

प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते ।

धर्म ध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते ॥करलो ॥४॥

सम्यक्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता ।

रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता ॥करलो ॥५॥

निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती ।

निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती ॥करलो ॥६॥